शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

श्रीलाल शुक्ल के कथा-साहित्य में वर्णित प्रमुख शैलियों का विवेचनात्मक अध्ययन

नरेन्द्र सिंह (शोधार्थी)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गुना, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

स्वातंत्र्योत्तर काल के सुप्रसिद्ध कथाकार श्रीलाल शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य में कथ्य, आशय एवं मूल संवेदना के अनुरूप एक विशिष्ट भाषा का आविष्कार किया है। इनके कथा-साहित्य में विविध शैलियों का सुन्दरतम प्रयोग दिखाई देता है। इनके साहित्य में यथार्थपरक या यथार्थवादी शैलियों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। स्थानों पर भावपक्ष या भावात्मक शैली का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। इनके कथा-साहित्य के प्राकृतिक एवं मानवीय वातावरण की सौन्दर्य वृद्धि हेतु अनेकशः छोटे-बड़े, हल्के-गहरे रंगों के चित्र-बिम्ब यत्र-तत्र अनायास समुपस्थित हो गये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में श्रीलाल शुक्ल के कथा साहित्य में वर्णित प्रमुख शैलियों का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

श्रीलाल शुक्ल के कथा साहित्य में शैलियाँ

मनुष्य जीवन में शैली का महत्वपूर्ण स्थान है। शैली व्यक्तित्व के आईने के समान कार्य करती है। प्रमुख व्यक्तियों ने अपनी विशिष्ट शैली के कारण पहचान अर्जित की है। चूंकि मनुष्य विचारशील होता है। उसके मस्तिष्क में अनगिनत विचारों का तांता लगा रहता है। जब प्रतिभाशाली व्यक्ति इन विचारों को विशिष्ट और व्यवस्थित तरीके से अभिव्यक्त करने लगता है, तब वह दूसरों से अलग दिखने लगता है। साहित्यि के क्षेत्र में भी शैली ही एक लेखक को दूसरे से अलग करती है। प्रस्तुतीकरण की भिन्नता के जैसे विचारों को भी नवीनता प्रदान कर देती है। वास्तव में शैली विचारों का परिधान है। आमतौर पर तीन प्रकार की शैलियाँ प्रचलित हैं : विवरणात्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली और मूल्यांकनपरक शैली। लेकिन एक रचनाकार अपने साहित्य सृजन के दौरान इनके साथ अन्य कई शैलियों को प्रयुक्त करता है। जैसे श्रीलाल शुक्ल के कथा साहित्य में निम्नलिखित शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं - 1. व्यंग्य शैली, 2. चेतना-प्रवाह शैली, 3. विश्लेषणात्मक शैली, 4. पूर्वदीप्ति शैली, 5. यथार्थ शैली, 6. नाट्य शैली, 7. भावात्मक शैली, 8. डायरी शैली, 9. पत्र शैली, 10. किस्सागोई शैली, 11. निवेदनात्मक शैली, 12. तर्क शैली, 13. बिम्ब या चित्र- चित्रणात्मक शैली, 14. प्रतीकात्मक शैली आदि।

शुक्ल जी अपने उपन्यासों में कहीं हास्य और कहीं व्यंग्य शैलियों के द्वारा स्थितियों और पात्रों के प्रति अपनी-अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं तथा कहीं-कहीं प्राकृतिक एवं मानवीय प्रतिबिम्बों में चित्रांकन हेतु भावात्मक शैली का अद्वितीय प्रयोग मिलता है। श्रीलाल शुक्ल ने जिस तरह एक नवीन यथार्थवादी भाषिक संरचना का निर्माण किया है, उसी तरह कुछ नयी शैलियों का भी यत्र-तत्र प्रयोग किया है।

1 व्यंग्य शैली - व्यंग्य शब्द का अर्थ उसकी व्यंजना वृत्ति द्वारा प्रकट होता है। यह प्रभाव

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

की दृष्टि से अधिक शक्तिशाली होता है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार व्यंग्य के उद्भव के मूल में वह शब्द-शक्ति है, जिसे व्यंजना कहा गया है। व्यंग्य का शाब्दिक अर्थ होगा - व्यंजना शक्ति के कारण प्रकट होने वाले साधारण से कुछ विशिष्ट अर्थ। गूढ़ और छिपा हुआ अर्थ। व्यंग्य का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द सटायर है।

कथाकार श्रीलाल शुक्ल के अनुसार- "भारतीय साहित्य की परम्परा में व्यंग्य अभिव्यक्ति की एक भंगिमा है। अभिधा, लक्षणा, व्यजना में व्यंजना का प्रयोग करते समय आपका जो आधार होता है वह व्यंग्य है। इस रूप में भारतीय साहित्य में व्यंग्य को कभी वैसी विद्या नहीं माना गया, जिस रूप में नाटक या कविता आदि थे। पाश्चात्य साहित्य में जरूर यह एक विधा के रूप में समाप्त हो गया।"[2] इस प्रकार व्यंग्य एक शैली के रूप में सिद्ध होता है न की एक स्वतंत्र विधा।

हिन्दी व्यंग्य-परम्परा के विषय में कुमारी आभा भट्ट का कहना है कि "हिन्दी के विभिन्न युगों के समाज, सामाजिक मूल्यों, प्रतिष्ठा के स्वरूप और मानवीय पीड़ा को समझना होता, जिन साहित्यकारों का उल्लेख किया जा रहा है जो कि व्यंग्य के माध्यम से अपना लक्ष्य प्राप्त करते हैं, तो वे हैं कबीर, भारतेन्दु बाबू, बाल मुकुन्द गुप्त, निराला तथा हरिशंकर परसाई।"[3]

इससे सुस्पष्ट हो जाता है कि साहित्यकार व्यंग्य के माध्यम से साहित्य के एक सामाजिक आशय की पूर्ति मात्र करते हैं। जैसा कि श्रीलाल शुक्ल का मानना है कि "व्यंग्य लेखक के मन में एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था का निजी अवधारणा होती है, जिसे अपना आधार बनाकर वह अपने दूषित और दुर्बल समाज के प्रति आक्रोश व्यक्त करता है। यह अवधारणा, यूटोपिया का यह आग्रह ही उसके लेखन के साकारात्मक पक्ष को लोक-स्वीकृति देता है और उसकी भर्त्सना पूर्ण आक्रामकता को न्यायोचित बनाता है।"[4] सच्चा साहित्यकार वही है जो अपने समाज की विकृतियों को पहचान कर उसे समाज की जनता के समक्ष समुपस्थित करने का संकल्प लेता है। उसका वह लक्ष्य व्यंग्य के माध्यम से ही पूर्ण होता है। इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि व्यंग्य एक विधा नहीं बल्कि एक अभिव्यक्ति की सशक्त धारदार तलवार है।

आधुनिक काल के उपन्यासों में इस व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग सर्वाधिक दिखाई देता है। कथाकार श्रीलाल शुक्ल ने स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक विषमताओं, कुप्रथाओं, विसंगतियों, असंगतियों और राजनीतिक अधःपतन पर प्रबल कुठाराघात किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यंग्यशैली का अधिकाधिक प्रयोग कर हिन्दी साहित्य के एक बहुत बड़े आशय की पूर्ति की है। इस विषय में डॉ. परना श्रीवास्तव का कहना है, "जिन्दादिली के साथ यथार्थ के जटिल रूपों की आलोचनात्मक समझ ने श्रीलाल शुक्ल को व्यंग्य से बड़ा सर्जनात्मक काम लेने का नया साहस दिया। व्यंग्य कथाएँ भी मिलकर एक जटिल औपन्यासिक संसार बना सकती हैं पर यह किस तरह सम्भव होता है, इसके ले श्रीलाल शुक्ल जैसे लेखक का समग्र पाठ जरूरी है।"[5]

इस प्रकार गद्य साहित्य के साथ श्रीलाल शुक्ल को व्यंग्य लेखन की प्रतिभा ने ही उपन्यास लेखन की ओर उत्साहित किया है। उनकी साहित्यिक भाषा में व्यंग्यात्मकता स्वाभाविक रूप से समाहित हुई है। उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक वा धार्मिक परिस्थितियों पर स्वाभाविक व्यंग्य किया है, जो अपने आप में अद्वितीय है। 'सूनी घाटी का सूरज' नामक

उपन्यास में राजनीतिक परिस्थिति को सुरेन्द्र प्रताप सिंह के माध्यम से कालेज की राजनीति में दिखलाना स्वाभाविक व्यंग्य का सर्वोत्तम मिसाल है। मैनेजर ग्रुप हेडमास्टर से किस कदर नाराज है, जिसके चलते प्रधानाचार्य का पद जाना स्वाभाविक था। यथा ''मैनेजर साला बड़ा खूसट है। कालेज को अपनी जीविका का साधन बनाए हुए है। हेडमास्टर साहब को अब्तब परेशान करता है। फिर भी सच्चाई से वे अपना काम करते चले आ रहे हैं।''[6] इस प्रकार कालेज की प्रशासनिक व्यवस्था में राजनीतिक हस्तक्षेप को शुक्ल जी ने व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है।

इसी तरह शुक्ल जी ने 'सीमाएँ टूटती हैं' नामक अपने दूसरे उपन्यास में चाँद के माध्यम से राजनीतिज्ञों पर करारा व्यंग्य करते हुए लिखते हैं... ''हर जनतंत्र का फैशन है कि राजनीतिज्ञों को, जो जनतंत्र को स्वरूप देते हैं, झूठा, फरेबी और पाखंड़ी समझा जाता है। इसे इसी तरह सहजता से लिया है, जैसे हम जहाँ अध्यापकों को शोषित और सम्माननीय समझते हैं। इसीलिए चाँद ने राजनीति व्यक्तियों के लिए जो दो चार भद्दी बातें कहीं, वे अपने आप में नई नहीं थी, हर तीसरा आदमी ऐसी बातें करता है।''[7] यहाँ चाँद के माध्यम से राजनीति पर दार्शनिक वर्णन किया गया है।

'अज्ञातवास' उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल ने सामाजिक विषमता को दिखाया है। वसंत का लड़का, प्रभा से कहता है कि ''आप ये गीत क्यों सुनना चाहती हैं, हमारा कुछ भी तो आपको अच्छा नहीं लगता। तब हमारे ये गीत ही आपको क्यों अच्छे लगते हैं।''[8] यहाँ लेखक ने वसंत नामक छोटे लड़के के माध्यम से शोषक-वर्ग पर करारा व्यंग्य किया है।

'रागदरबारी' नामक विश्व-प्रसिद्ध उपन्यास में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अनूठा व्यंग्य करते है लिखते हैं कि ''वर्तमान शिक्षा पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है जिसे कोई भी लात मार सकता है।''[9] इससे सुस्पष्ट होता है कि हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बड़ी खामियाँ हैं, जिन्हें समय रहते यदि दूर नहीं किया गया तो देश रसातल को चला जायेगा।

'पहला पडाव' उपन्यास के द्वारा श्रीलाल शुक्ल सार्वजनिक निर्माण विभाग के असिस्टेंट इंजीनियर के हाथों शोषित हो रहे भट्टा मजदूरों की आर्थिक विपन्नता का हृदय-विदारक चित्र व्यंग्य के द्वारा प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं कि ''सरकार उन्हें तनख्वाह दे रही है, काम नहीं देती, तभी वे अपने आदमियों को काम देते हैं, तनख्वाह नहीं देते या कम से कम कोशिश ऐसी ही करते हैं।''[10]

'मकान' उपन्यास का नायक ''नारायण वनर्जी का सेक्शन आफिसर के दफ्तर आते-जाते वह जीवन की जटिलता का बड़े वेग से अनुभव करने लगता है और फिर उस अनुभव के सहारे जीवन को कुछ गाकर झेलने की फिलसिफी पर मुझे व्याख्यान देता है।''[11] यहाँ लेखक ने नारायण वनर्जी के बहाने सरकारी अफसरों पर करारा व्यंग्य किया है।[12]

रागदरबारी उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल प्रशासनिक व्यवस्था को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं ''तनख्वाह तो दारू-कलियाँ पर खर्च करते हैं और लड़कियाँ ब्याहने के लिए घूस लेते हैं। एक रिश्वत लेता है तो दूसरा कहता है कि क्या करें बेचारा, बड़ा खानदान है, लड़कियाँ ब्याहनी हैं। सारी बदमाशी का तोड़ लड़कियों के ब्याह पर होता है। यहाँ शुक्ल जी लालफीताशाही पर करारा वयंग्य करते नजर आ रहे हैं।

इसी तरह रागदरबारी उपन्यास में बुद्धिजीवि लोगों पर व्यंग्यात्मक शैली में विवेचना स्पष्ट करते हैं कि ''बुद्धिजीवी होने के कारण अपने को बीमार और बीमार होने के कारण अपने को बुद्धिजीवी साबित करता है और अन्त इस बीमारी का अंत कॉफी-हाउस की बहसों में, शराब की बोतलों में, आवारा औरतों की बाहों में, सरकारी नौकरी में और कभी-कभी आत्महत्या में होता है।''[13]

2 विश्लेषणात्मक शैली - उपन्यास विधा के लेखन में अपने विचारों को प्रकट करने के लिए लेखक एक विशेष प्रकार की शैली का प्रयोग करता है , समालोचना की भाषा में जिसे विश्लेषणात्मक शैली कहते हैं। जिसे दूसरे शब्दों में विवेचनात्मक शैली भी कहा जाता है। एक सफल उपन्यासकार वही कहलाता है जो अपनी रचना में पात्रों के चरित्र की मानसिकता, यथार्थता, परिस्थितियों का निष्पक्ष विश्लेषण प्रस्तुत करता है। जैसा कि श्रीलाल शुक्ल रागदरबारी में रंगनाथ की मानसिकता को दिखाने के लिए इस शैली का प्रयोग करते हुए लिखते हैं कि ''पिछले महीने वह जिस जिन्दगी के आस-पास मंडराता रहा था, जिसके भीतर घुसकर भी वह बाहरी का बाहरी ही बना रहा, वह एक लानत की तरह उसके सामने आकर खड़ी हो गयी। उसकी आत्मा के तारों पर बशर्ते कि आत्मा की शक्ल सारंगी जैसी होती हो- पलायन-संगीत गूंजने लगा।''[14] यहाँ पर शुक्ल जी ने पात्रों की मानसिकता के साथ-साथ परिस्थितियों पर भी यथार्थ व्यंग्य किया है।

इसी तरह 'सीमाएँ टूटती हैं' नामक उपन्यास में दुर्गादास के केस के बारे में शंकर और तारानाथ जब वकील के पास जाते हैं, तो वहाँ वकील की बातों का विश्लेषण इसी शैली में हुआ है। ''जैसे कोई सर्जन ओपरेसन के कमरे से अपना विरान चेहरा लेकर बाहर आए और कहे मुझे अफसोस है, पर हम मरीज को बचा नहीं सके, कुछ वैसे ही निर्विकारता वकील की आवाज में थी।''[15]

3 यथार्थ शैली - हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार ''साहित्य की एक विशिष्ट चिन्तन पद्धति जिसके अनुसार कलाकार को अपनी कृति में जीवन के यथार्थ रूप का अंकन करना चाहिए।''[16]

श्रीलाल शुक्ल ने बदलते हुए समय और जटिल समस्याओं को उद्घाटित किया है। उनका यथार्थ वर्णन इतना विद्रूप एवं भयावह है कि उसे देखना एक हास्यास्पद और त्रासद लगता है। इनका यह यथार्थ चित्रण तीखा एवं प्रत्यक्ष है कि पाठक वर्ग को अपना पास-पड़ोस जान पड़ता है। जैसा कि 'अज्ञातवास' में रजनीकांत अपना ओवरसियर को मात्र इसलिए डांटता है कि एक निम्न जाति का बालक गाने से मना करके अपने साथियों सहित वापस चला जाता है। इस पर रजनीकांत कहता है ''एक गँवार लड़का इस तरीके से यहाँ ऊधम मचाकर चला जाए और तुम कुछ न कर सको और बाद में तुम आते हो मेरे मेहमानों के सामने इस तरह की बात सुनाते के लिए।''[17] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि ऊँच-नीच का भेद-भाव आज भी है।

4 भावात्मक शैली - आधुनिक काल में भावात्मक शैली का प्रयोग काव्य के साथ-साथ गद्य में भी खूब होने लगा है। ये कथा साहित्य में भावगत ऐसा प्रवाह उत्पन्न करती है कि वर्ण्यविषय में एक अपूर्व भावात्मकता आ जाती है, जिससे उपन्यास अत्यन्त रोचक बन जाता है। इस विषय में श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित 'सूनी घाटी का सूरज' नामक उपन्यास में एक अनूठा प्रसंग आता है। जिसमें कथा नायक रामदास संध्याकालीन शोभा को देखकर सहसा बोल पड़ता

है कि ''इन अमराइयों के पीछे पश्चिमी क्षितिज कितना रंगीन हो गया है। मैं चित्रकार होता तो इन रंगों को हमेशा के लिए उतार लेता।''[18] प्रस्तुत प्रसंग में संध्या समय की अमराइयों को देखकर रामदास के मन में छुपे चित्रकार बनने के संस्कार मूर्तरूप लेते दर्शाया गया है।

5 नाट्य शैली - उपन्यासकार प्रायः अपने उपन्यास को अत्यधिक रोचक व ग्राह्य बनाने के लिए नाट्यशैली का प्रयोग करते हैं। श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यासों में अनेकशः स्थानों पर इस नाट्य शैली का प्रयोग संवादों में सुन्दरता एवं नाटकीयता लाने के लिए किया है। जैसा कि 'सूनी घाटी का सूरज' में सत्या के विवाह का समाचार सुनकर राजभर उससे कहता है कि... ''इसे कहते हैं जनरल नॉलेज उर्फ साधारण ज्ञान। यह मैं बिना बताए जानता हूँ कि आप जैसी सुयोग्य कन्याओं को उनके माता-पिता, समाज और युनिवर्सिटी के छात्र बहुत दिन तक अविवाहित नहीं रहने देते।''[19] प्रस्तुत प्रसंग में वैवाहिक महत्व को नाट्यशैली के माध्यम से समझाया है।

इसी तरह श्रीलाल शुक्ल 'मकान' नामक उपन्यास में नारायण वनर्जी के सितार वादन का नाट्य-शैली का मनोहर वर्णन करते हुए लिखते हैं कि ''उसमें मुझे कहाँ फँसा रहे हो, दादा, वहाँ ज्यादातर सफाई या जल-कल विभाग वाले होंगे, या चुंगी के सिपाही। उनके लिए तो कीर्तन-बीर्तन और लोकगीत यही सब चलेगा।

बारीन- यह तो सब होगा ही।

सितार वे क्या समझेंगे।

इतना तो समझोंगें के बजाने वाला उन्हीं का आदमी है।''[20]

6 पूर्व दीप्ति शैली - पूर्व दीप्ति शैली को अंग्रेजी में फ्लैश बैक भी कहा जाता है। डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने पूर्व दीप्ति शैली के बारे में कहा है कि ''लेखक कभी-कभी वर्तमान से अतीत में पदार्पण करता हुआ चित्रित किया जाता है जिसे पूर्व दीप्ति या फ्लेशबेक पद्धति कहते हैं, जिसके अन्तर्गत पात्रों की स्मृति से अतीत की घटनाएँ प्रदिप्त होती है।''[21] यहाँ लेखक घटनाओं की सूक्ष्मता, मनोवैज्ञानिकता, पात्र के मानसिक संघर्ष और तनाव की अभिव्यक्ति आदि को पूर्व दीप्ति शैली के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

7 चेतना-प्रवाह शैली - इस शैली को फ्रांस में मनोर्लाग आंतेरियर कहा जाता है। इस शैली में स्वप्न-सा देखते हुए जीवन के लघु परन्तु महत्वपूर्ण क्षणों को पकड़ने का प्रयास किया जाता है। इससे मनुष्य के रहस्यमय क्षेत्रों को खोलकर विचारों को उनकी प्रवाहात्मक में पका लेने का प्रयास किया जाता है। श्रीलाल शुक्ल ने इसशैली का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया है। जैसे कि 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में कुंवर जयन्ती प्रसाद जब सुन्दरी को देखता है तो वह अपने कॉलेज के दिनों में वापस चला जाता है तथा जहाँ उसे जयश्री की याद आने लगती है। ''बरसों का एक सुपरिचित चेहरा जिसकी साँसों का वे आज भी अपने चेहरे पर अनुभव कर रहे हैं। जिसकी ऊष्मा उनके कंधे और छाती को आज भी नहीं छोड़ना चाहती और जिसके लिए पिछले वर्षों में न जाने कितनी रातें उन्होंने खुली आँखों सपना देखते हुए बितायी हैं। वही आज अचनाक उनके सामने था।''[22] इस प्रकार कुँवर साहब जयन्ती के अन्दर अपने कॉलेज की जयश्री को देखने लगते हैं और उनकी आत्मा सुन्दरी के माध्यम से वर्तमान, भूत और भविष्य में भटकने लगती है।

8 डायरी शैली - जीवन की जब कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ मन के रोजनामचा में क्रमशः अंकित

होती रहती हैं, समुचित अवसर पाकर स्मृति के रूप में मानस पटल पर अवतरित होकर उसे लेखनीबद्ध करने के लिए बाध्य कर देती हैं तो उसे ही डायरी शैली कहते हैं। श्रीलाल शुक्ल ने उपन्यास 'मकान' में इसी शैली का उपयोग किया है। जैसा कि उपन्यास का नायक नारायण अपने पुराने शहर में मकान की समस्या को लेखक ने डायरी शैली के माध्यम से 3 अक्टूबर 1971 से नारायण के जीवन के तीन साल, दो महीने, उन्नीस दिन किस तरह से व्यतीत हुए इसका रोचक वर्णन किया है।

9 पत्रात्मक शैली - लेखक जब पत्रों के माध्यम से आपसी संबंधों एवं कथोपकथन को द्वारा यथार्थ का वर्णन करता है तो उसे पत्रात्मक शैली कहते हैं। जैसा कि शुक्ल 'सूनी घाटी का सूरज' नामक उपन्यास में सत्या रामदास की आत्मकथा पढ़कर उसे पत्र लिखती है "प्रिय रामदास, तुम्हारी अनिता को मैं जानती हूँ। जिस प्रकार तुमने उसे मुझसे परिचित कराया, उसका अर्थ भी तुमने बाद के स्पष्ट कर दिया।"[23] उस घटना से ज्ञात होता है कि सत्या रामदास की अन्तरंग दोस्त है।

10 किस्सागोई शैली - कहानी कहने और सुनने की कला को ऊर्दू की भाषा में किस्सागोई कहा जाता है। इस शैली का प्रयोग प्रायः लोक-प्रचलित प्रसिद्ध कथाओं के आधार पर किया जाता है। हिन्दी के प्रायः सभी प्रेमाख्यान काव्य और उपाख्यान इसी शैली में लिखे गये हैं। 'पहला पडाव' नामक उपन्यास में शुक्ल जी ने संतोष के द्वारा लूटमार की किस्सा सुनाने का रोचक वर्णन करत हुए लिखते हैं कि "लूटमार का किस्सा सुनने की मुझे जरूरत नहीं थी। उसका मैं सोते हुए भी आँखों देखा हाल वर्णन कर सकता हूँ। परसों रात नेतम्दंपति और दूसरे मुसाफिरों को लूटने वाली जो युवाशक्ति थी, वह मेरे ही पुराने साथियों की होगी। इस पर मैं दस का नोट लगाने को तैयार हूँ।'[24] यहाँ लेखक ने लूट का किस्सा रोचक शब्दों में वर्णित किया है।

11 निवेदनात्मक शैली - इस निवेदनात्मक शैली का प्रयोग भी श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में खूब हुआ है। जैसा कि 'मकान' नामक उपन्यास में शुक्ल जी लिखते हैं "जैसे ये बस्तियाँ- जैसे कि यह रवीन्द्र नगर एक्सटेंशन है- नाम से बड़ी भोली-भाली लगती है। नाम सुनते ही मन पवित्र हो जाता है। किसी का नाम गौतमपल्ली है, लगता है कि गौतमबुद्ध का त्याग और तपस्या यहाँ के जर्रे-जर्रे में झलक रही होगी। एक किसी ने सर्वोदय नगर बसाया है, जैसे वहाँ घर-घर में विनोबा भावे रहते हों। किसी बस्ती का नाम है रामकृष्णपुरम् किसी का नाम है तात्या टोपे नगर जो शायद ईंट-गारे से नहीं, खून और शहादत से बनायी गयी होगी।"[25]

12 तर्क शैली - श्रीलाल शुक्ल रागदरबारी में एक पुराने मंदिर को लेकर तर्क शैली का प्रयोग करते हुए लिखते हैं कि "रंगनाथ को यही बताया गया था कि मंदिर सतयुग का बना हुआ है। वह शुरू से ही किसी शिलाखंड पर ब्राह्मी अक्षर पढ़ने की कल्पना कर रहा था। पर मंदिर को दूर से देखते ही विश्वास हो गया कि अपने देशवासी समय के बारे में सिर्फ दो सही शब्द जानते है और वे हैं अनादि और अनन्त। इसके सिवाय वे लगभग पचहत्तर वर्ष पुराने मंदिर को आसानी से गुप्तकाल या मौर्यकाल में धकेल सकते हैं। मंदिर के ऊपर बने हुए बेलबूटों के बीच लिखा था बनवाया मंडप महिषासुरमर्दिनी का मुसम्मे इकबाल बहादुरसिंह वल्द नरेन्द्र बहादुरसिंह तखत भीखापुर ने मिती कार्तिक वदी दसमी संवत 1950 विक्रमी को। इसे पढ़ते ही रंगनाथ का

सारा पुरातत्व हवा में उड़ गया।''[26] उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण लोग किस प्रकार पीढ़ी दर-पीढ़ी किसी मंदिर को पौराणिक काल में बलात ले जाता हैं।

13 चित्रात्मक शैली - एक सफल उपन्यासकार वही है जो चित्रों के द्वारा वस्तु, घटना व्यापार, गुण-विशेषता, विचार, साकार पदार्थों और मानस क्रियाओं को प्रत्यक्ष एवं इंद्रियग्राह्य बना देता है। किसी अप्रस्तुत वस्तु का कल्पनात्मक या मानसिक रूप ही चित्र कहलाता है।

इस चित्रात्मक शैली का प्रयोग श्रीलाल शुक्ल उपन्यासों में अनेक स्थानों पर हुआ है। जैसा कि अज्ञातवास उपन्यास में जब रजनीकांत ग्रामीण परिवेश छोड़ रहा था, उस समय का वर्णन चित्रात्मक शैली में करते हुए लिखते हैं ''वर्षा के प्रथम आसार से धुली हुई लहर लेती हुई हरियाली। यह वन कितनी दूर तक फैला चला गया है। इसके उस पार फिर घनी बागे मिलेंगी, खेत होंगे, पर रजनीकांत के घर की छत से यही लगता था कि उसके पार भी एक और वन होगा, कुछ और घना, कुछ और रहस्यमय। फैलती ही छायाएँ, मिटती हुई हरियाली-इन सबका निस्सीम सघन विस्तार वे देखते रहे। बोले रानी तुम देख रही हो न, मैं कल जा रहा हूँ। मेरा यह हराभरा संसार कुछ दिनों के लिए पीछे छूट जायेगा।''[27] इससे रजनीकांत की मानसिकता का पता चलता है।

14 प्रतीकात्मक शैली- बृहद् हिन्दीकोश के अनुसार- ''वह जिस पर किसी का आरोप किया गया हो, प्रतिरूप, प्रतिमा, वह दृश्य वस्तु या तथ्य जो प्रायः अनुरूप होने के कारण उसके प्रतिनिधि या प्रतिरूप के रूप में मान ली जाय।''[28] अमर साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल अपने 'अज्ञातवास' नामक उपन्यास में प्रस्तुत शैली का सुन्दरतम चित्रांकन करते हुए लिखते हैं ''बड़े आदमियों की बड़ी बातें सरकार, जैसे जायका बदलने के लिए बड़े-बड़े लोग बाजरे की रोटी खा लेते हैं। हमारे मारिसन साहब ने तो एक बार बीडी भी पी थी, सिर्फ देखने के लिए कि कैसी लगती है। पीकर बहुत हँसे। वैसे ही हुजूर लोगों को देहाती गीतों का शौक है। सरकार, बढ़िया-बढ़िया, दादरा, कव्वाली, टप्पा सुनते-सुनते तबीयत में आ गया कि कहारों, चमारों के गीतों का भी जायका लिया जाए।''[29] यहां कुलीनों की मानसिकता को प्रतीकात्मक शैली में कुशलता पूर्वक दर्शाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 संपादक श्यामसुन्दरदास : हिन्दी शब्द सागर, पृष्ठ 4633
2 तद्भव पत्रिका, पृष्ठ 132
3 आभा भट्ट, हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग-चेतना, पृष्ठ 61
4 श्रीलाल शुक्ल, अज्ञेय कुछ रंग, कुछ राग, पृष्ठ 73
5 तद्भव पत्रिका, पृष्ठ 02
6 श्रीलाल शुक्ल, सूनी घाटी का सूरज़ पृष्ठ 85
7 श्रीलाल शुक्ल, टूटती सीमाएँ, पृष्ठ 199
8 संपादक- अखिलेश, श्रीलाल शुक्ल की दुनिया, पृष्ठ 36
9 डॉ. बापूराव देसाई, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 27
10 श्रीलाल शुक्ल, पहला पड़ाव, पृष्ठ 36
11 श्रीलाल शुक्ल, मकान, पृष्ठ 10
12 श्रीलाल शुक्ल, रागदरबारी, पृष्ठ 35
13 श्रीलाल शुक्ल, रागदरबारी, पृष्ठ 144
14 श्रीलाल शुक्ल, रागदरबारी, पृष्ठ 335
15 श्रीलाल शुक्ल, सीमाएँ टूटती हैं, पृष्ठ 106
16 संपादक-धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्यकोश, पृष्ठ 660
17 श्रीलाल शुक्ल, अज्ञातवास, पृष्ठ 57
18 श्रीलाल शुक्ल, सूनी घाटी का सूरज़ पृष्ठ 09

19 श्रीलाल शुक्ल, सूनी घाटी का सूरज, पृष्ठ 17

20 श्रीलाल शुक्ल, मकान, पृष्ठ 46

21 डॉ. लक्ष्मीनाराण वार्ष्णेय, द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी-साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 39

22 श्रीलाल शुक्ल, बिसामपुर का संत, पृष्ठ 25

23 श्रीलाल शुक्ल, सूनी घाटी का सूरज, पृष्ठ 117

24 श्रीलाल शुक्ल, पहला पडाव, पृष्ठ 09

25 श्रीलाल शुक्ल, मकान, पृष्ठ 111

26 श्रीलाल शुक्ल, रागदरबारी, पृष्ठ 118

27 श्रीलाल शुक्ल, अज्ञातवास, पृष्ठ 16

28 संपादक-कालिका प्रसाद, बृहद् हिन्दीकोश, पृष्ठ 732

29 श्रीलाल शुक्ल, अज्ञातवास, पृष्ठ 30